International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 28-12-2025, Accepted: 27-01-2026, Published: 11-02-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 109-112

अज्ञेय एवं निर्मल वर्मा के यात्रा साहित्य का तुलनात्मक विश्लेषण

दीप्ति डिगल[1], डॉ. स्नेहलता दास[2]
[1] शोधार्थी, हिन्दी विभाग, रमादेवी महिला विश्वविद्यालय, विद्या विहार, भुवनेश्वर, ओड़िशा, भारत
[2] विभागाध्यक्षा, हिन्दी विभाग, रमादेवी महिला विश्वविद्यालय, विद्या विहार, भुवनेश्वर, ओड़िशा, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र हिन्दी साहित्य के दो प्रमुख हस्ताक्षर सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' एवं निर्मल वर्मा के यात्रा साहित्य का विश्लेषणात्मक और तुलनात्मक अध्ययन है। हिन्दी यात्रा साहित्य के बदलते स्वरूप के दर्शन इन साहित्यकारों के यात्रा साहित्य में द्रष्टव्य हैं। हिन्दी साहित्य में यात्रा साहित्य के कलेवर को केवल भौगोलिक सीमा में सीमित न करते हुए उसे आत्मानुभूति, संवेदनशील विचारधारा, अस्तित्वबोध, बौद्धिकता तथा ऐतिहासिक–सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य से समन्वित करने में इन दो महानुभावों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। अज्ञेय के यात्रा साहित्य जहाँ बौद्धिकता, तर्क, आधुनिक चेतना और सांस्कृतिक विश्लेषण का प्रतिपादन करता है, वहीं दूसरी ओर निर्मल वर्मा के यात्रा साहित्य संवेदना, स्मृति तथा अस्तित्वबोध की गंभीर अनुभूतियों को अभिव्यक्त करते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में इन दोनों साहित्यकारों के यात्रा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन उनकी दृष्टि, विषयवस्तु, उद्देश्य, सांस्कृतिक संदर्भों तथा भाषा–शैली के आधार पर किया गया है। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि दोनों साहित्यकारों ने यात्रा साहित्य की विधा को अपनी–अपनी लेखन शैली से समृद्ध करते हुए हिन्दी यात्रा साहित्य का विकास एक अग्रणी विधा के रूप में किया है।

मूल शब्दः यात्रा साहित्य, अज्ञेय, निर्मल वर्मा, आत्मानुभूति, संवेदना, अस्तित्वबोध, बौद्धिकता

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य में यात्रा साहित्य एक आधुनिक विधा है। यात्रा साहित्य एक स्वतंत्र विधा के रूप में स्थापित होने से पूर्व हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं में यात्रा विषयक वर्णन यत्र–तत्र देखने को मिलते हैं। जैसे वेदों, पुराणों, उपनिषदों, रामायण, महाभारत तथा विभिन्न ऐतिहासिक ग्रंथों में यात्रा संबंधी घटनाओं का चित्रण दर्शनीय हैं। यात्रा करना मानव सभ्यता का एक अभिन्न अंग है। मानव प्रारंभ से ही यात्रा करता आ रहा है। प्राचीन काल में यह यायावरी प्रवृत्ति जीवनयापन के विविध प्रयोजनों के लिए संपृक्त था। परंतु कालांतर में यह प्रवृत्ति मानव–जीवन के विकास, ज्ञानार्जन तथा सौन्दर्यबोध से प्रेरित होते हुए विविध प्रयोजनों से विकसित हुआ है। डॉ. ओमप्रकाश सिंहल के शब्दों में, "देश–विदेश के विभिन्न स्थानों की यात्रा से हमें न केवल अनुभूत वस्तुओं, दृश्यों एवं पदार्थों का ज्ञान प्राप्त होता है अपितु ऐसे कटु–मधुर अनुभव भी प्राप्त होते हैं, जो हमारी जीवन दृष्टि को व्यापकता प्रदान करते हैं।" [1] अतः किसी यायावर की यात्रानुभूति जब रचनात्मक सौन्दर्य से संलग्न होकर अभिव्यक्त होता है तब यात्रा साहित्य की एक विधा के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित होता है। यात्रा साहित्य मानव विकास की गाथा का एक ज्वलंत दस्तावेज है। हिन्दी साहित्य कोश के अनुसार, "सौन्दर्य की दृष्टि से उल्लास की भावना से प्रेरित होकर यात्रा करने वाले यायावर एक प्रकार से साहित्यिक मनोवृत्ति के माने जाते हैं और उनकी मुक्त अभिव्यक्ति को यात्रा साहित्य कहा जा सकता है।" [2]

यात्रा साहित्य हिन्दी साहित्य की वह गद्य विधा है जिसमें यात्राकार अपने यात्रानुभवों के माध्यम से उक्त स्थान के भौगोलिक वर्णन के साथ–साथ वहाँ के काल, समाज, संस्कृति एवं इतिहास आदि को भी अभिव्यक्त करता है। यात्रा साहित्य का मूलभूत उद्देश्य पाठकों को उन देश–विदेश की विविध पहलुओं से अवगत कराने के साथ अपनी यात्रा के दौरान आए विचारों को साझा करना भी है। जिससे पाठक भी यात्राकार के साथ ही यात्रा करता हुआ अनुभव करता है। यात्रा साहित्य को पढ़ते हुए पाठकों के मन में भी उस विशेष स्थान की यात्रा करने की प्रेरणा जाग्रत होती है। मूलतः यात्रा साहित्यकार हमें नए भूगोल से परिचित कराने के साथ–साथ एक वैचारिक पुनर्मूल्यांकन करने का अवसर भी प्रदान करता है। हिंदी साहित्य में यात्रा साहित्य का महत्त्व इसलिए भी बढ़ जाता है कि यह विधा मानव एवं समाज, संस्कृति, परंपरा एवं आधुनिकता तथा आंतरिक व बाह्य संसार के मध्य संवाद स्थापित करती है। इस संदर्भ में डॉ. गोविंद त्रिगुणायत का कथन ध्यातव्य है, "साहित्यिक यात्रा वर्णनों में लेखक की प्रकृतिगत विशेषताएँ प्रतिबिंबित मिलती हैं। उसका फक्कड़पन, घुमक्कड़ता, मस्ती और उल्लास उसके यात्रा संबंधी विवरणों में प्राण प्रतिष्ठा कर देते हैं। बाह्य जगत की प्रतिक्रिया से लेखक के हृदय में जो भावनाएँ जागती हैं, वह उसको अपनी सम्पूर्ण चेतना के साथ व्यक्त कर देता है, जिससे शुष्क विवरण मधुर और भाव–विभोर करने वाले हो जाते हैं।" [3]

मूलतः हिन्दी यात्रा साहित्य की परंपरा में भारतेन्दु युग एवं द्विवेदी युग के यात्रा साहित्य का विषय धार्मिक–ऐतिहासिक स्थलों तथा सामाजिक–भौगोलिक परिस्थितियों एवं उनकी विशेषताओं का विवरणात्मक वर्णन करना था। इन यात्रा साहित्य का उद्देश्य पाठकों को नई जगहों से परिचित कराना था। परंतु समयक्रम के साथ यात्रा साहित्य की लेखन–शैली, दृष्टिकोण और उद्देश्य में क्रांतिकारी परिवर्तन आने लगे।

जिसका सूत्रपात महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने किया। उन्होंने हिंदी यात्रा साहित्य को एक वैचारिक विस्तार प्रदान कर यात्रा को ज्ञान, इतिहास और संस्कृति के संवाहक के रूप में चित्रित किया। स्वतंत्रता के बाद हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियों में परिवर्तन परिलक्षित होने लगे। तत्कालीन साहित्यकारों ने समाज केंद्रित यथार्थपरक रचनाओं के साथ–साथ वैयक्तिक अनुभवों, आत्मचेतना, मानसिक द्वन्द्व तथा अस्तित्वबोध रूपी प्रसंगों को साहित्य का विषय बनाया। अतः यात्रा साहित्य इन समस्त अभिव्यक्तियों का एक उत्कृष्ट माध्यम बना। स्वतंत्रता के बाद अज्ञेय एवं निर्मल वर्मा जैसे साहित्यकारों ने इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए यात्रा को आत्मान्वेषण, मानवीय संवेदना, अस्तित्वबोध, बौद्धिकता तथा सांस्कृतिक विमर्श से जोड़ा है। स्वयं अज्ञेय के शब्दों में, "अरे यायावर रहेगा याद? की बढ़ती हुई लोकप्रियता यदि इस बात का संकेत है कि पाठकों में अपने देश को एक समग्र इकाई के रूप

में पहचानने की उत्सुकता बढ़ रही है तो वह मेरे लिए विशेष सुखद बात है। भ्रमण या देशाटन केवल दृश्य–परिवर्तन या मनोरंजन न हो कर सांस्कृतिक दृष्टि के विकास में भी योग दे, यही उसकी वास्तविक सफलता होती है। अपने यात्रा–संस्मरणों में मेरा यह प्रयत्न रहा है कि उन यात्राओं के मेरी होने की बात उन्हें तात्कालिक अनुभव की प्रामाणिकता और टटकापन देने के लिए सामने आए; नहीं तो वे वृत्तान्त एक समग्र दृष्टि को उभारने में ही योग दें जिससे भविष्यत् यात्री अपने–अपने अनुभव को और समृद्ध बना सकें।" [4]

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी के रूप में प्रसिद्ध हैं। वे कुशल कवि, कहानीकार, उपन्यासकार तथा आलोचक के साथ–साथ एक सजग यायावर भी थे। डॉ. शशिशेखर तिवारी ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी यात्रा साहित्य' में अज्ञेय के बारे में लिखते हुए कहा कि, "सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' के व्यक्तित्व और कृतित्व में हिन्दी–साहित्य की एक कालावधि की सृजनात्मकता प्रतिभासित होती है। इसलिए कि कभी–कभी साहित्य के क्षेत्र में भी ऐसे व्यक्तियों का उद्भावन होता है, जिन्हें इतिहास बनाता है और जो स्वयं भी इतिहास बनाते हैं। इस प्रसंग में अज्ञेय, आधुनिक हिन्दी साहित्य की रचनात्मकता, प्रयोगधर्मिता और विविधा की उच्छल तरंगों के साथ उसको नयी दिशा की ओर मोड़नेवाले व्यक्तित्व सिद्ध होते हैं। ये कवि, कथाकार, निबन्धकार, पत्रकार तथा सम्पादक आदि ही नहीं, क्रान्तिकारी, सैनिक और देश–विदेश की यायावरी के प्रतिमान भी हैं। एक आलोचक ने कहा है कि प्रायः सभी साहित्य–सर्जकों के कृतित्वों में एक केन्द्रीय ऊर्जा उजागर होती है। इसी मान्यता की प्रासंगिकता अज्ञेय के कृतित्व में व्यंजित होती है।" [5] अज्ञेय के समूचे जीवन में यात्रा का विशेष महत्व रहा है। संभवतः इसी कारण उनका यायावरी स्वभाव उनकी समस्त रचनाओं में प्रतिबिंबित होती हैं। "अज्ञेय को सर्वाधिक नदियों और पर्वतों से विशेष लगाव है। इस निष्कर्ष के साक्ष्य इनकी कृतियों के कई 'शीर्षकों' से भी प्रकट होते हैं, जैसे– 'नदी के द्वीप', 'विपथगा', 'सदा नीरा' और इनकी यायावरी से सीधा सम्बन्ध रखनेवाली कृतियों के शीर्षकों, 'अरे यायावर रहेगा याद?', 'स्मृति–लेखा', 'एक बूँद सहसा उछली' और 'संस्कृति के भावनायकों की लीलास्थली', 'सागर मुद्रा', 'सुनहले शैवाल', 'हरि घास पर क्षण–भर', 'पूर्वा' आदि में भी बिम्बित हैं।" [6]

हिन्दी यात्रा साहित्य के जगत में महापंडित राहुल सांकृत्यायन के उपरांत अज्ञेय का नाम आदर से लिया जाता है। अज्ञेय के यात्रा साहित्य में 'अरे यायावर रहेगा याद?' और 'एक बूंद सहसा उछली' विशेष महत्वपूर्ण हैं। 'अरे यायावर रहेगा याद?' भारतीय उपमहाद्वीप के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक काल द्वितीय विश्व युद्ध तथा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की पूर्व पीठिका का जीवंत वृत्तांत है। आठ अध्यायों में विभाजित इस पुस्तक में अज्ञेय ने असम से पश्चिमी सीमांत प्रांत तक अपनी यात्राओं के विविध परिदृश्य को प्रस्तुत किया है। 'एक बूंद सहसा उछली' में अज्ञेय की यूरोपीय यात्रा के अनुभव संकलित हैं। यूनेस्को द्वारा प्रायोजित इस यात्रा में वे लगभग एक वर्ष तक यूरोप में रहे। रोम, पेरिस, बर्लिन, स्विटजरलैंड आदि देशों का भ्रमण किया। मुख्यतः अज्ञेय हिंदी यात्रा साहित्य के उन यात्राकारों में अग्रणी हैं जिन्होंने आत्मानुभूति, आत्मान्वेषण एवं आधुनिक बौद्धिक चेतना को अपने लेखन का केंद्र बनाया है। उनके यात्रा साहित्य में बाह्य यात्रा की अपेक्षा आंतरिक यात्रा पर अधिक बल दिया गया है। वे जिस स्थान पर यात्रा करते हैं वहाँ की प्रकृति, समाज तथा संस्कृति को देखने के साथ–साथ स्वयं से भी संवाद करते हैं। अज्ञेय के शब्दों में, "लेकिन स्पष्ट है कि अरे यायावर रहेगा याद? जैसी पुस्तकों को उनसे मिलने वाली भौगोलिक अथवा प्रादेशिक जानकारी के लिए नहीं पढ़ा जाएगा। ऐसे यात्रा–संस्मरण 'टूरिस्ट गाइड' का स्थान लेने के लिए नहीं लिखे और पढ़े जाते। ऐसी पुस्तकों में प्रस्तुत ब्यौरा एक व्यक्ति की यात्रा का ब्यौरा होता है, और वह यात्रा जितनी बाहरी होती है उतनी ही भीतरी भी। यात्रा का विवरण जितना स्थूल भू–विस्तार से संबद्ध होता है उतना ही सूक्ष्म मानसिक भूगोल से भी। 'टूरिस्ट गाइड' के सहारे अनेक व्यक्ति एक ही यात्रा कर सकते हैं; यात्रा–संस्मरण के सहारे की गई प्रत्येक पाठकीय यात्रा भी उतनी ही विशिष्ट होती है जितनी लेखक की यात्रा रही। और प्रत्येक के लिए संस्मरण– लेखक के मानस में प्रवेश करना आवश्यक होता है। यही इस तरह के यात्रा–संस्मरणों की रोचकता का आधार हो सकता है।" [7]

हिन्दी साहित्य के इतिहास में निर्मल वर्मा जैसे बहुआयामी व्यक्तित्व की उपस्थिति अद्वितीय है। उनके द्वारा सृजित कहानी, उपन्यास, नाटक तथा यात्रा साहित्य आदि हिन्दी साहित्य की कालजयी रचनाओं में परिगण्य हैं। हिन्दी गद्य–विधाओं की पारंपरिक सीमाओं को चुनौती देते हुए उन्हें पूरी तरह से अपने साहित्य में पुनः परिभाषित करने का श्रेय निर्मल वर्मा जी को जाता है। प्रसिद्ध आलोचक डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी के शब्दों में, "निर्मल वर्मा के गद्य में कहानी, निबन्ध, यात्रा–वृत्त और डायरी की समस्त विधाएँ अपना अलगाव छोड़कर अपनी चिन्तन–क्षमता और सृजन–प्रक्रिया में समरस हो जाती हैं... आधुनिक समाज में गद्य से जो विविध अपेक्षाएँ की जाती हैं, वे यहाँ सब एकबारगी पूरी हो जाती हैं।" [8]

हिन्दी यात्रा साहित्य के क्षेत्र में निर्मल वर्मा का आगमन एक युगांतरकारी घटना है। यात्रा साहित्य की परंपरा में भारतेन्दु हरिश्चंद्र के राष्ट्रबोध एवं जिज्ञासा परक यात्राएँ, महापंडित राहुल सांकृत्यायन की सूचनात्मक और विवरणात्मक यात्राएँ तथा अज्ञेय की आत्म–चेतना, सांस्कृतिक विश्लेषण एवं बौद्धिक प्रधान यात्राओं के बाद हिन्दी यात्रा साहित्य की परिभाषा को एक नए आयाम देने में निर्मल वर्मा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रमुखतः निर्मल वर्मा हिन्दी यात्रा साहित्य के ऐसे यात्राकार हैं जिन्होंने अपने यात्रा साहित्य में संवेदना, स्मृति, अस्तित्वबोध आदि गंभीर विषय को केंद्र में रखा है। यूरोप प्रवास के दौरान लिखे गए उनके यात्रा साहित्य 'चीड़ों पर चाँदनी' और 'हर बारिश में' में सांस्कृतिक अलगाव, अकेलापन और अस्तित्वगत पीड़ा की गहरी अनुभूति देखने को मिलती है। वे बाहरी संसार को देखने के साथ–साथ अपने भीतर की रिक्तता, स्मृतियों एवं भावनात्मक अनुभवों को भी शब्द देते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। स्वयं निर्मल वर्मा के शब्दों में, "अरसे बाद अपने इन स्मृति–खंडों को दोबारा पढ़ते समय मुझे एक अजीब–सा सूनापन अनुभव होता रहा है– कुछ वैसा ही रीता अनुभव, जब हम किसी ज़िन्दा फड़फड़ाते पक्षी को क्षण–भर पकड़कर छोड़ देते हैं– उसकी देह हमसे अलग हो जाती है लेकिन देर तक हथेलियों पर उसकी धड़कन महसूस होती रहती है। एक दूरी का अभाव जो सफ़री–सूटकेस पर विभिन्न देशों के लेब्लों पर लटका रहता है–उन्हें न रख पाने का मोह रह जाता है, न फेंक पाने की निर्ममता ही जुड़ पाती है।" [9]

वस्तुतः अज्ञेय एवं निर्मल वर्मा के यात्रा साहित्य विभिन्न ऐतिहासिक काल और भौगोलिक संदर्भों से संबंधित हैं। अज्ञेय कृत 'अरे यायावर रहेगा याद?' द्वितीय विश्व युद्ध तथा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौर की है, जिस समय भारत अपनी राजनैतिक पहचान को तलाश रहा था। स्वयं अज्ञेय के अनुसार, "प्रस्तुत पुस्तक के यात्रा–संस्मरणों में स्थानों का जो ब्यौरा है, कुछ तो वह पहले प्रकाशन के समय ही पुराना पड़ गया था: कुछ यात्राएँ पिछले महायुद्ध के पहले की थीं, पुस्तकाकार प्रकाशन स्वाधीनता– प्राप्ति के बाद हुआ।" [10] दूसरी तरफ निर्मल वर्मा की यूरोपीय यात्रा द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के काल के प्रभाव व विभीषिका से जुड़ी है जहाँ यूरोप अपनी आर्थिक–सामाजिक समृद्धि के पुनर्निर्माण के दौर से गुजर रहा था। निर्मल वर्मा अपनी यात्रा के दौरान यह स्पष्ट करते हुए

लिखते हैं, "मैं मध्य–यूरोप में हूँ–जर्मनी में और यह 1961 की गरमियाँ हैं–दूर–दूर फैले हुए खेतों पर जून की उजली, उनींदी–सी धूप और भूरी मिट्टी की गन्ध। एक बोझिल–सी गन्ध, जिसमें पूरी एक मृत पीढ़ी का अतीत भरा है। मैं दो बार लन्दन और पेरिस जाते हुए जर्मनी के बीच से गुज़रा हूँ–किन्तु कभी यहाँ उतरने को मन नहीं हुआ। कोई अदृश्य–सा भय, एक अजीब–सी झिझक सामने खड़ी हो जाती है। युद्ध को खत्म हुए एक लम्बा अरसा बीत गया। कोई भी आज उसे याद नहीं करता।" [11]

अज्ञेय और निर्मल वर्मा दोनों के यात्रा साहित्य आधुनिक चेतना से संबंधित हैं। परंतु इन दोनों की दृष्टि व अभिव्यक्ति में स्पष्ट अंतर नजर आता है। जैसे अज्ञेय की लेखन शैली अधिक बौद्धिक, विश्लेषणात्मक और तर्कप्रधान हैं। वे भारतीय जीवन की गति की ओर इंगित करते हुए लिखते हैं , "कहते हैं कि सृष्टि की सर्वोत्तम आकृति चक्र है...। संस्कृति और सभ्यता के विकास में अग्नि के अवतरण के बाद जो दूसरी पीढ़ी मानव प्राणी चढ़ा, वह मैं हूँ, या यों कह लीजिये कि देवताओं के समुद्र–मन्थन से जैसे सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि अग्नि की हुई, उसी प्रकार मानव–मन–रूपी महासागर के मन्थन से जो श्रेष्ठ नवनीत प्राप्त हुआ, वह है चक्राकार की उद्भावना...।" [12] दरअसल अज्ञेय के लिए यात्रा आत्मान्वेषण का माध्यम है। साथ ही वे स्वयं को 'राहों के अन्वेषी' के रूप में देखते हैं जो न केवल अपनी यात्राओं के द्वारा नए भूगोल तक जाते हैं, बल्कि उस भूगोल के भीतर विलुप्त कई सांस्कृतिक संदर्भों का अन्वेषण भी करते हैं। जबकि निर्मल वर्मा की लेखन शैली अधिक संवेदनात्मक, अनुभूतिपरक और आत्मीय दृष्टि को अभिव्यक्त करता है। यात्रा उनके लिए स्मृति, आत्मिक अनुभव और अस्तित्वबोध का माध्यम बन जाती है। इस प्रसंग में डॉ. शशिशेखर तिवारी का कथन उपयुक्त है, "यात्रा–वृत्तान्तकार के रूप में निर्मल वर्मा की खासियत के जो गुण प्रकट होते हैं, उनमें से एक है, यात्रा के पहले, बीच और अन्त में उपजी हुई स्मृतियों को खूबी से एक सूत्र में बाँधना। इस क्रम में संस्मरण का यह अंश अपनी पूरी प्रासंगिकता व्यक्त करता है, ष्आधी यात्रा पर पीछे छूटे हुए शहर की स्मृतियाँ मँडराती हैं, केवल आधा फासला पार करने के बाद ही हम उस स्थान के बारे में सोच पाते हैं जहाँ हम जा रहे हैं। किन्तु ऐसे लम्हें भी होते हैं, जब हम बहुत थक जाते हैं– स्मृतियों में भी और तब खाली आँखों के बीच का गुजरता हुआ रास्ता ही देखना भला लगता है...।" [13] निर्मल वर्मा के लिए 'यात्रा' स्थान (स्पेस) की अपेक्षा समय (टाइम) और स्मृति (मेमोरी) अधिक महत्वपूर्ण है। उनके अनुसार किसी दूसरी जगह जाने पर तमाम चीजें हमारे परिचय क्षेत्र में आती हैं–लोग, प्रकृति, आपसी रिश्ते...।

विशेषतः अज्ञेय एवं निर्मल वर्मा दोनों के लिए यात्रा एक जीवन–दर्शन है। उनका विश्वास है कि गति ही जीवन है और रुकना मृत्यु है। इसलिए उनकी यात्राएँ केवल भौगोलिक यात्राओं तक सीमित नहीं हैं। बल्कि वास्तव में उनकी यात्राएँ 'आंतरिक यात्राओं' के अधिक निकट हैं।अज्ञेय के अनुसार, "यायावर को भटकते चालीस बरस हो चले...कितने स्थल उसने देखे जहाँ बैठ कर ऋषियों ने देहों पर वल्मीक उगा लिये, जहाँ मुनि तपस्या करते–करते पाषाण हो गए, जहाँ देवता जम कर पर्वत–शृंग बन गए, जहाँ मानवों ने ऐहिक कांक्षाओं–वासनाओं से मुक्ति पाई–किन्तु यायावर ने समझा है कि देवता भी जहाँ मन्दिर में रुके कि शिला हो गए, और प्राण–संचार के लिए पहली शर्त है गति, गति, गति!" [14] निर्मल वर्मा के शब्दों में, "और इसीलिए मैं कहता हूँ कि हर यात्री को अपनी झोली खोलकर यात्रा करनी चाहिए, जो न मिले उसका दुख न करके जो मिले उसे समेटकर ही अपने भाग्य की सराहना करनी चाहिए। क्योंकि यह तो मैं अपने अनुभव से जानता हूँ कि सुख का अभाव कभी दुख का कारण नहीं बनता, उलटे एक नए, अपरिचित सुख को जन्म देता है।" [15]

मुख्यतः अज्ञेय और निर्मल वर्मा के यात्रा साहित्य अपने काल के विविध परिप्रेक्ष्यों का सांस्कृतिक विमर्श प्रस्तुत करते हैं। दोनों ही यात्राकार अपनी–अपनी यात्राओं में भारतीय एवं पश्चिमी संस्कृति, परंपरा तथा आधुनिकता के मध्य चिंतन–मनन करते हुए परिलक्षित होते हैं। अज्ञेय के 'एक बूँद सहसा उछली' में वे यूरोप देश में ही नहीं बल्कि उस देश के काल में भी यात्रा करते हैं। "जो प्रदेश वह आपके सामने लाता है उसका सांस्कृतिक परिपार्श्व भी आपकी आँखों के सामने रूप ले लेता है। जिस चरित्र को वह आपके सम्मुख खड़ा करता है उसकी एक चितवन में एक पूरे समाज के इतिहास की झाँकी आपको मिल जाती है।" [16] इसीलिए अज्ञेय लिखते हैं, "यों तो ऐसे एक अकेले व्यक्ति के चित्रण से भी एक पूरे देश का, सभ्यता का, युग का चित्र खींचा जा सकता है। यूरोप के एकाधिक देश में मुझे ऐसे व्यक्तियों को देखने या उनसे मिलने का सहयोग हुआ जिनके माध्यम से कुछ क्षणों में ही मुझे एक पूरे समाज की या कम–से–कम विशेष युग–स्थिति के समाज की, जीवन–परिपाटी बिजली की–सी कौंध के साथ दीख गयी– मुझे ऐसा लगा कि मैंने सहसा पूरे देश–बल्कि समूचे यूरोप की आत्मा की झाँकी पा ली है।" [17] इसके साथ ही अज्ञेय भारतीय संस्कृति व परंपरा पर अपने विचार प्रकट करते हुए लिखते हैं, "भारत की ही संस्कृति ऐसी है कि उसे धर्मविश्वास मूलक भी कहा जा सकता है और लौकिक भी। हमारे लिए धर्मविश्वास रहित होकर संस्कृति रह ही नहीं सकती, परंतु दूसरी ओर संस्कार की पहचान हम लौकिक आचरण से ही करते हैं।" [18] वास्तव में भारतीय एवं पश्चिम संस्कृति में बहुत अंतर है। हमारी भारतीय संस्कृति समाज केंद्रित है तो पश्चिम की संस्कृति व्यक्ति केंद्रित। निर्मल वर्मा पश्चिम की संस्कृति को उपभोक्तावादी संस्कृति कहते हुए लिखते हैं, "उपभोक्ताओं की बाजारू संस्कृति ने आज धीरे–धीरे उन सब साधना को अपना लिया है, जो एक समय में शुद्ध सृजनात्मक संस्कृति के साधन थे– फिल्म, टेलीविजन, थियेटर, संगीत, पुस्तके और इन दो संस्कृतियों के अभिव्यक्ति माध्यम एक ही है।" [19]

मूलतः अज्ञेय एवं निर्मल वर्मा के यात्रा साहित्य में भाषा–शैलीगत अंतर स्पष्ट परिलक्षित होते हैं। अज्ञेय की भाषा–शैली संयमित, विचारप्रधान, काव्यात्मक, गंभीर और संस्कृतनिष्ठ हैं। "मैंने देखा: एक बूँद सहसा उछली सागर के झाग से– रँगी गयी क्षण–भर ढलते सूरज की आग से। मुझको दीख गया: हर आलोक–छुआ अपनापन है उन्मोचन नश्वरता के दाग से।" [20] जबकि निर्मल वर्मा की भाषा–शैली सजीव, विश्लेषणात्मक, भावात्मक, प्रतीकात्मक तथा उसमें अंग्रेजी शब्दों के भी प्रयोग देखने को मिलते हैं। डॉ. शशिशेखर तिवारी के अनुसार, "भाषा–शैली की दृष्टि से निर्मल वर्मा के यात्रा–संस्मरण हिन्दी ही नहीं, विश्व के यात्रा–साहित्य में भी अपनी मौलिकता और विशिष्टता के कारण खास जगह बनाते हैं।" [21] अतः अज्ञेय की भाषा–शैली का प्रभाव पाठकों को सोचने के लिए प्रेरित करते हैं। इसके विपरीत निर्मल वर्मा की भाषा–शैली पाठकों को महसूस कराते हैं।

निष्कर्ष

अज्ञेय और निर्मल वर्मा हिंदी यात्रा साहित्य के दो प्रमुख स्तंभ हैं। उनकी यात्राएँ हमें सिखाती हैं कि यात्रा केवल स्थान या दृश्य परिवर्तन नहीं बल्कि आंतरिक अन्वेषण और अनुभव की एक सतत प्रक्रिया भी है। अज्ञेय की 'अरे यायावर रहेगा याद?' और 'एक बूंद सहसा उछली' तथा निर्मल वर्मा की 'चीड़ों पर चाँदनी' और 'हर बारिश में' यह न केवल यात्रा साहित्य हैं, बल्कि यह विभिन्न काल और संदर्भों के ऐतिहासिक–सांस्कृतिक दस्तावेज हैं। दोनों साहित्यकारों ने यह संदेश दिया है कि यात्रा हमें दुनिया को समझने में मदद करने के साथ–साथ स्वयं को भी समझने में

सहायता करती है। दोनों के यात्रा साहित्य में 'यात्रा' आत्मानुभूति, मानवीय संवेदना, आधुनिकता तथा सांस्कृतिक विमर्श से जुड़कर एक नई साहित्यिक ऊँचाई तक पहुँचती है। अज्ञेय की बौद्धिकता और निर्मल वर्मा की संवेदना मिलकर हिंदी यात्रा साहित्य को वैचारिक तथा भावनात्मक दोनों स्तरों से समृद्ध करते हैं। अतः अपने–अपने भिन्न अभिव्यक्ति कौशल से दोनों साहित्यकारों ने हिन्दी यात्रा साहित्य को नई दिशा प्रदान कर समृद्ध किया है। अंततः यह तुलनात्मक विश्लेषण यह दर्शाता है कि अज्ञेय एवं निर्मल वर्मा के यात्रा साहित्य केवल अपनी यात्रा साहित्य की विधा में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण हिंदी साहित्य के लिए महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. ओमप्रकाश सिंहल: समकालीन हिन्दी–साहित्य, यात्रा–वृत्त के प्रतिमान, पृ. 165
2. धीरेन्द्र वर्मा: हिन्दी साहित्य कोश, भाग–1, पृ. 663
3. डॉ. गोविंद त्रिगुणायत: शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत, भाग–2, पृ. 510
4. अज्ञेय: अरे यायावर रहेगा याद?, पाँचवे संस्करण की भूमिका, पृ. 7
5. डॉ. शशिशेखर तिवारी: हिंदी यात्रा–साहित्य, लोकभारती प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2021 ई., पृ. 113–114
6. वही, पृ. 114
7. अज्ञेय: अरे यायावर रहेगा याद?, दूसरे संस्करण की भूमिका पृ. 10
8. निर्मल वर्मा: चीड़ों पर चाँदनी, भूमिका के पूर्व दिए गए डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी के कथन
9. वही, भूमिका, पृ. 7
10. अज्ञेय: अरे यायावर रहेगा याद?, दूसरे संस्करण की भूमिका पृ. 9
11. निर्मल वर्मा: चीड़ों पर चाँदनी, पृ. 20
12. अज्ञेय: अरे यायावर रहेगा याद?, पृ. 15
13. डॉ. शशिशेखर तिवारी: हिंदी यात्रा–साहित्य, लोकभारती प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2021 ई., पृ. 144
14. अज्ञेय: अरे यायावर रहेगा याद?, पृ. 16
15. निर्मल वर्मा: चीड़ों पर चाँदनी, पृ. 99
16. अज्ञेय: एक बूँद सहसा उछली, निवेदन लेखन के पूर्व दिए गए कथन
17. वही, पृ. 19
18. वही, पृ. 54
19. निर्मल वर्मा, हर बारिश में, पृ. 13
20. अज्ञेय: एक बूँद सहसा उछली, क्रम–सूची से पूर्व की पंक्ति
21. डॉ. शशिशेखर तिवारी: हिंदी यात्रा–साहित्य, लोकभारती प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2021 ई., पृ. 153